सामाजिक विज्ञान

(अर्थशास्त्र)

अध्याय-2: भारतीय अर्थव्यवस्था के क्षेत्रक

आर्थिक गतिविधि:-

ऐसे क्रियाकलाप जिनको करके जीवनयापन के लिए आय की प्राप्ति की जाती है।

अर्थव्यवस्था के क्षेत्रक:-

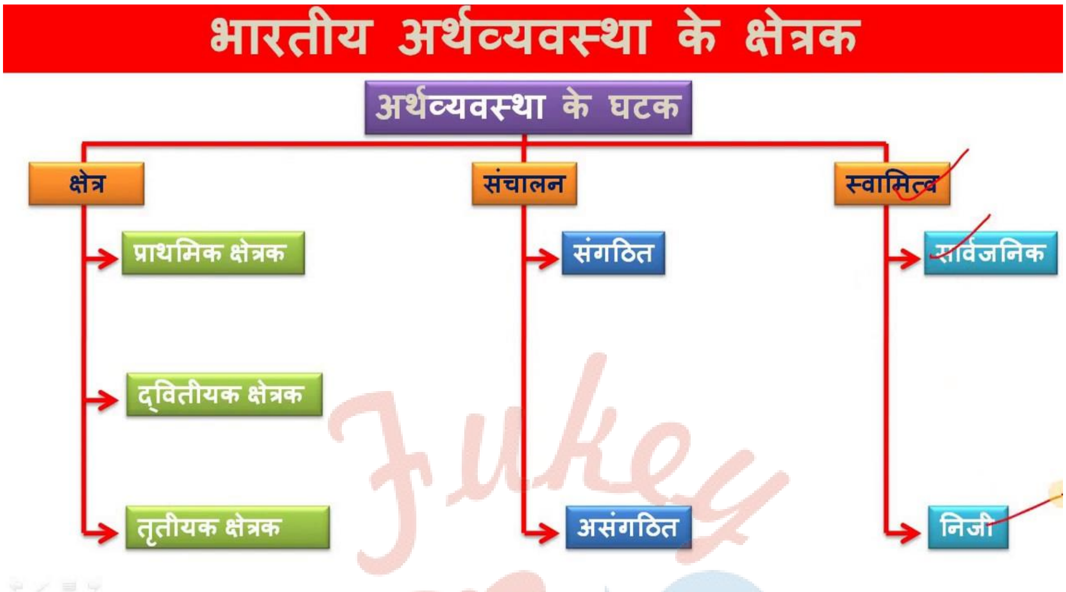

किसी भी अर्थव्यवस्था को तीन क्षेत्रक या सेक्टर में बाँटा जाता है:-

1. प्राथमिक क्षेत्रक
2. द्वितीयक क्षेत्रक
3. तृतीयक क्षेत्रक

प्राथमिक क्षेत्रक:-

वह क्षेत्रक है जिसमे प्राकृतिक संसाधनों का प्रयोग करके वस्तुओं का उत्पादन किया जाता है, प्राथमिक क्षेत्रक कहलाता है। इस कृषि व सहायक क्षेत्रक भी कहा जाता है। उदाहरण:- कृषि, मत्स्य पालन आदि।

द्वितीयक क्षेत्रक:-

वह क्षेत्रक जिसमे प्राथमिक क्षेत्रक से प्राप्त वस्तुओं को लेकर नई वस्तुओं का विनिर्माण किया जाता है, द्वितीयक क्षेत्रक कहलाता है। इसे औद्योगिक क्षेत्रक भी कहते हैं।

तृतीयक क्षेत्रक:-

Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

1. तृतीयक क्षेत्रक प्राथमिक व द्वितीयक क्षेत्रक के उत्पादन गतिविधियों में सहायता करता है। इसे सेवा क्षेत्रक भी कहते हैं। उदाहरण:- बैंकिग, परिवहन आदि।
2. सेवा क्षेत्रक में उत्पादन सहायक गतिविधियों के अतिरिक्त अन्य सेवाएं भी हो सकती हैं। जैसे:- डॉक्टर, वकील आदि की सेवा, कॉल सेंटर, सॉफ्टवेयर विकसित करना आदि।

तीनों आर्थिक क्षेत्रकों में ऐतिहासिक बदलाव:-

- 1972 में स्वतंत्रता के बाद भारतीय जीडीपी में प्राथमिक क्षेत्र प्रमुख था।
- जैसे – जैसे कृषि पद्धति में सुधार होता है और अधिशेष भोजन का उत्पादन होता है, लोगों ने अपनी ऊर्जा को विनिर्माण की दिशा में चैनलाइज किया।
- बहुत जल्द ही द्वितीयक क्षेत्रक को प्रमुखता मिली।
- प्राकृतिक और द्वितीयक क्षेत्र के विकास के कारण, सूचना और प्रौद्योगिकी, व्यापार, परिवहन आदि, तृतीयक क्षेत्रक को प्रमुखता मिली।
- 2011-2012 में भारतीय जीडीपी में तृतीयक क्षेत्र की हिस्सेदारी लगभग 60 प्रतिशत है।

सकल घरेलू उत्पादक:-

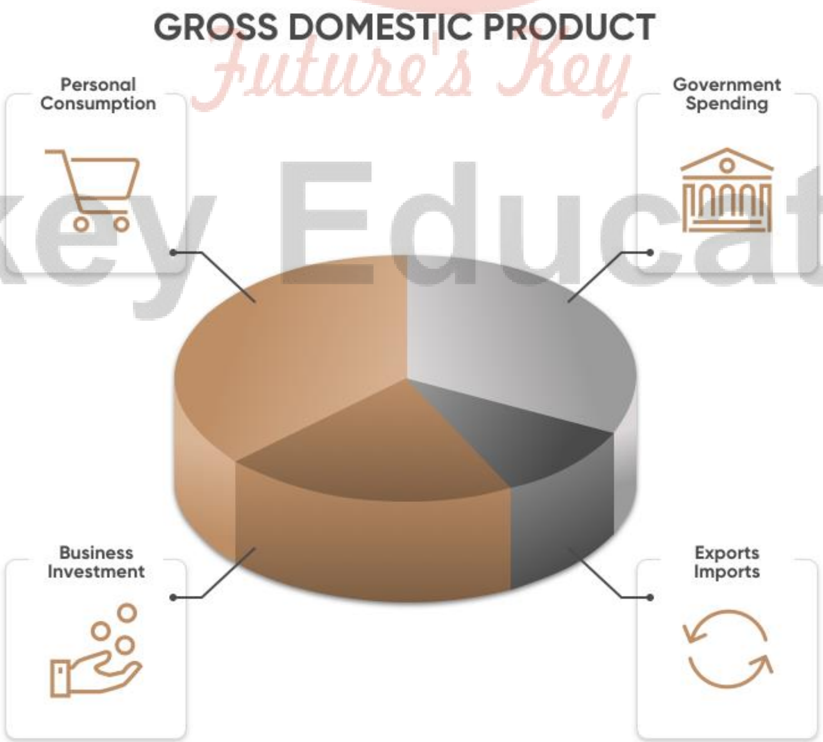

Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

किसी विशेष वर्ष में प्रत्येक क्षेत्रक द्वारा उत्पाद अंतिम वस्तुओं व सेवाओं का मूल्य उस वर्ष में देश के कुल उत्पादन की जानकारी प्रदान करता है। तीनों क्षेत्रकों के उत्पादनों के योगफल को देश का सकल घरेलू उत्पादक कहते हैं।

दोहरी गणना:-

दोहरी गणना की समस्या तब उत्पन्न होती है जब राष्ट्रीय आय की गणना के लिए सभी उत्पादों के उत्पादन मूल्य को जोड़ा जाता है, क्योंकि इसमें कच्चे माल का मूल्य भी जुड़ जाता है। अतः समाधान के लिए केवल अंतिम उत्पाद के मूल्य की गणना की जानी चाहिए।

भारत में तृतीयक क्षेत्रक सबसे महत्वपूर्ण होने के कारण:-

यह लोगों को बुनियादी सेवाएँ प्रदान करता है। उदाहरण:- अस्पताल, पोस्ट ऑफिस, टेलीग्राफ आदि।

- कृषि और उद्योग के विकास के लिए परिवहन और व्यापार जैसी गतिविधियाँ महत्वपूर्ण हैं।
- लोगों के आय स्तर के बढ़ने के साथ लोगों द्वारा अधिक सेवाओं की आवश्यकता या मांग उत्पन्न हुई।
- सूचना और संचार पर आधारित नई सेवाएँ आवश्यक हो गई हैं।
- यह बड़ी संख्या में लोगों को रोजगार प्रदान करता है।

प्राथमिक, द्वितीयक व तृतीयक क्षेत्रकों के परस्पर एक दूसरे पर निर्भर होने के कारण:-

- प्राथमिक क्षेत्रक को उत्पादन बढ़ाने व वितरण के लिए नई तकनीकों व परिवहन की आवश्यकता होती है।
- विनिर्माण उद्योगों के लिए कच्चा माल प्राथमिक क्षेत्रक से ही प्राप्त होता है।
- प्राथमिक व द्वितीयक क्षेत्रक की सहायता से ही सेवा क्षेत्रक में नए – नए रोज़गार के अवसर प्राप्त होते हैं। जैसे:- भंडारण, बैंकिग, यातायात आदि।

Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

- तीनों क्षेत्रक परस्पर निर्भर हैं, किसी एक की भी अनुपस्थिति का अन्य दोनों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

प्रच्छन्न बेरोज़गारी (छिपी हुई बेरोजगारी) की समस्या:-

1. जब लोग प्रत्यक्ष रूप से कार्यरत होते हैं परन्तु वास्तव में बेरोज़गार होते हैं अर्थात् एक ही काम में जरूरत से ज्यादा लोग लगे होते हैं, उसे प्रच्छन्न बेरोज़गारी कहते है।
2. कृषि क्षेत्र में अल्प बेरोजगारी की समस्या अधिक है अर्थात् यदि हम कुछ लोगों को कृषि क्षेत्र से हटा भी देते हैं तो उत्पादन में विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा।

अतिरिक्त रोजगार का सृजन करने के उपाय:-

1. छोटी अवधि के लिए उपाय:-

- महात्मा गांधी राष्ट्रीय रोजगार योजना 2005 जैसी योजनाएँ : यह योजना 2005 में लागू की गई।
- इस योजना के अंतर्गत 100 दिनों के रोजगार की गारन्टी दी गई है।
- रोजगार न मिलने पर बेरोजगारी भत्ता दिया जाना।
- अपने गाँव या आस – पास के क्षेत्र में ही कार्य स्थन होना।
- एक तिहाई रोजगार महिलाओं के लिए सुरक्षित।
- गरीबों में भी अति गरीब लोगों को रोजगार प्रदान करना।

2. दीर्घकालीन उपाय:-

- कृषि सुविधाओं में सुधार।
- सस्ती दर पर कृषि ऋण।
- अर्ध – ग्रामीण क्षेत्रों में उद्योगों की स्थापना।
- विद्यालय एवं कॉलेजों की स्थापना।
- स्वास्थ्य सुविधाओ को बेहतर करना।

शिक्षित बेरोज़गारी:-

Fukey Education

Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

जब शिक्षित, प्रशिक्षित व्यक्तियों को उनकी योग्यता के अनुसार काम नहीं मिलता।

ग्रामीण रोज़गार गारंटी अधिनियम 2005:-

केन्द्रीय सरकार ने भारत के 200 जिलों में काम का अधिकार लागू करने का एक कानून बनाया है।

काम का अधिकार:-

सक्षम व जरूरतमंद बेरोज़गार ग्रामीण लोगों को प्रत्येक वर्ष 100 दिन के रोज़गार की गारन्टी सरकार के द्वारा। असफल रहने पर बेरोज़गारी भत्ता दिया जाएगा। इसे महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम – 2005 (मनरेगा- 2005) कहते हैं।

राष्ट्रीय रोज़गार गारन्टी अधिनियम के प्रावधान:-

- राष्ट्रीय रोजगार गारन्टी योजना के अन्तर्गत 100 दिनों के रोज़गार की गारन्टी।
- रोजगार न मिलने या कम मिलने पर बेरोज़गारी भत्ता दिया जाना।
- अपने गाँव या आस – पास के क्षेत्र में ही कार्य स्थल होना।
- एक तिहाई रोजगार महिलाओं के लिए सुरक्षित है।
- गरीबों में भी अति गरीब लोगों को रोजगार प्रदान करना।

संगठित क्षेत्रक:-

इसमें वे उद्यम या कार्य आते हैं, जहाँ रोजगार की अवधि निश्चित होती है। ये सरकार द्वारा पंजीकृत होते हैं तथा निर्धारित नियमों व विनियमों का अनुपालन करते हैं।

संगठित क्षेत्र के कर्मचारी को प्राप्त लाभ:-

- काम के निश्चित घंटे होगें।
- निश्चित समय से अधिक काम करने पर अतिरिक्त आय प्राप्त होगी।
- चिकित्सा सुविधाएँ व पेंशन सुविधा मिलेगी।
- सवेतन अवकाश, भविष्य निधि का सेवानुदान मिलेगा।

Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

संगठित क्षेत्रक	असंगठित क्षेत्रक
अधिक वेतन प्राप्ति।	कम वेतन प्राप्ति।
नौकरी सुरक्षित।	नौकरी सुरक्षित नहीं।
कार्य की स्थितियाँ अच्छी।	निम्न स्तरीय कार्य परिस्थितियाँ।
कर्मचारी योजनाओं का लाभ।	कर्मचारी योजनाओं का लाभ नहीं।
कार्य अवधि (काम के घंटे) निश्चित।	कोई निश्चित कार्य अवधि नहीं।

- कार्य स्थल पर उचित वातावरण व न्यूनतम सुविधाएँ प्राप्त होंगी।
- अनुचित शोषण नहीं होगा।

असंगठित क्षेत्रक:-

छोटी – छोटी और बिखरी हुई ईकाइयाँ, जो अधिकाशंत:नियंत्रण से बाहर रहती हैं, से निर्मित होता है। यहाँ प्राय: सरकारी नियमों का पालन नहीं किया जाता।

असंगठित क्षेत्रक में मज़दूरों के सामने आने वाली कठिनाइयाँ:-

- यह क्षेत्रक सरकारी नियमों व विनियमों को नहीं मानता।
- न्यूनतम वेतन मिलता है।
- रोजगार की अवधि व कार्य समय सीमा निश्चित नहीं होती।
- किसी प्रकार की छुट्टी या लाभ का प्रावधान नहीं होता।
- निश्चित कार्य क्षेत्र व अच्छी सेवा सुविधाएँ उपलब्ध नहीं होता।

संगठित व असंगठित क्षेत्रकों में रोज़गार की परिस्थितियों में अन्तर:-

Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

भारत मे कृषि के असंगठित क्षेत्रक में होने के कारण:-

कृषि एक असंगठित क्षेत्रक है क्योंकि:-

- काम के घंटे निश्चित नहीं।
- बिना अतिरिक्त वेतन के काम करना पड़ता है।
- कृषि मजदूरों को दैनिक मजदूरी के अलावा कोई अन्य सुविधा नहीं।
- रोजगार सुरक्षित नहीं।
- मजदूरों की सुरक्षा नहीं।
- नियम – विनियम का अनुपालन नहीं।

संरक्षण की आवश्यकता वाले लोग:-

1. **असंगठित क्षेत्रक:-** भूमिहीन किसान, कृषि श्रमिक, छोटे व सीमान्त किसान, काश्तकार, बँटाईदार, शिल्पी आदि।
2. **शहरी क्षेत्रों में:-** औद्योगिक श्रमिक, निमार्ण श्रमिक, व्यापार व परिवहन में कार्यरत,कबाड़ व बोझा ढोने वाले लोगों को संरक्षण की आवश्यकता होती है।

सार्वजनिक क्षेत्र:-

जिसमें अधिकांश परिसम्पतियों पर सरकार का स्वामित्व होता है और सरकार ही सभी सेवाएँ उपलब्ध करवाती है।

निजी क्षेत्र:-

वह क्षेत्र जिसमें परिसम्पत्तियों का स्वामित्व और सेवाओं का वितरण एक व्यक्ति या कम्पनी के हाथों में होती है।

सार्वजनिक व निजी क्षेत्रक में अंतर:-

1. सार्वजनिक क्षेत्रक:-

- परिसम्पत्तियों पर सरकार का नियंत्रण।

- सभी सेवाएँ सरकार उपलब्ध करवाती है।
- इसका उद्देश्य अधिकतम सामाजिक कल्याण होता है।
- रोजगार सुरक्षा दी जाती है।
- सवैतनिक छुट्टी व अन्य सेवाएँ दी जाती हैं।

2. निजी क्षेत्रक:-

- परिसम्पत्तियों पर निजी स्वामित्त्व।
- सारी चीजें एक व्यक्ति या कम्पनी उपलब्ध करवाती है।
- अधिकतम लाभ कमाना इसका उद्देश्य होता है।
- रोज़गार व श्रमिक असुरक्षित होते हैं।
- सवैतनिक छुट्टी व अन्य सेवाएँ सामान्यतः नहीं दी जाती।

सार्वजनिक क्षेत्रक का राष्ट्र के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका:-

- इसमें ढाँचागत सुविधाओं, कृषि व उद्योगों को बढ़ावा दिया जाता है।
- लोगों को सुविधाएँ न्यूनतम मूल्य पर उपलब्ध करवाई जाती हैं।
- आवश्यक वस्तुओं के उत्पादन व विक्रय में सरकारी सहायता व अनुदान दिया जाता है।
- अधिकतम् सामाजिक कल्याण का उद्धेश्य रखकर योजनाएँ बनाई जाती हैं।
- श्रमिकों को अच्छी कार्य सुविधाएँ, वेतन आदि प्रदान किया जाता है।

तेजी से बढ़ती जनसंख्या किस प्रकार बेरोज़गारी को प्रभावित करती है?

Fukey Education

- रोज़गार के अवसर, जनसंख्या के अनुपात में नहीं बढ़ते।
- कृषि व शहरी क्षेत्रों में प्रच्छन्न बेरोजगारी बढ़ जाती है।
- संसाधनों पर बोझ बढ़ जाता है।
- अधिक व्यक्ति उपलब्ध होने से रोज़गार से प्राप्त आय निम्न स्तर पर आ जाती है।
- वस्तुओं व सेवाओं की कीमत बढ़ जाती है और उपलब्धता कम हो जाती है।

शहरी क्षेत्रों में रोजगार पैदा करने की विधियाँ:-

Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

- क्षेत्रीय शिल्प उद्योग व सेवाओं को प्रोत्साहन देना।
- पर्यटन उद्योग को प्रोत्साहन देना।
- अनावश्यक सरकारी नीतियों व नियमों में परिवर्तन।
- मूलभूत सुविधाएँ, तकनीकी शिक्षा को बढ़ावा देना।
- आसान शर्तों पर ऋण या आर्थिक सहायता प्रदान करना।

कृषि क्षेत्रक की प्रमुख समस्याएँ:-

- असिंचित भूमि।
- आय में उतार – चढ़ाव।
- कर्ज का बोझ।
- मौसम के बाद या पहले कोई नौकरी नहीं।
- कृषक कटाई के तुरंत बाद स्थानीय व्यापारियों को अपना अनाज बेचने के लिए मजबूर।

कृषि में अधिक रोजगार पैदा करने के उपाय:-

- किसानों को कृषि उपकरण खरीदने के लिए ऋण दिया जा सकता है।
- सूखे क्षेत्रों की सिंचाई के लिए बांध बनाए जा सकते हैं।
- बीज और उर्वरकों पर सब्सिडी दी जा सकती है।
- भंडारण की सुविधा प्रदान की जा सकती है।
- परिवहन सुविधाओं को बढ़ाया जा सकता है।

Fukey Education

Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

NCERT SOLUTIONS

प्रश्न (पृष्ठ संख्या 35)

प्रश्न 1 कोष्ठक में दिए गए सही विकल्प का प्रयोग कर रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए-

1. सेवा क्षेत्रक में रोजगार में उत्पादन के समान अनुपात में वृद्धि ______ (हुई है/ नहीं हुई है)
2. ______ क्षेत्रक के श्रमिक वस्तुओं का उत्पादन नहीं करते हैं। (तृतीयक/ कृषि)
3. _______ क्षेत्रक के अधिकांश श्रमिकों को रोजगार सुरक्षा प्राप्त होती है। (संगठित/ असंगठित)
4. भारत में _____ संख्या में श्रमिक असंगठित क्षेत्रक में काम कर रहे हैं। (बड़ी/ छोटी)
5. कपास एक _____ उत्पाद है और कपड़ा एक _____ उत्पाद है। (प्राकृतिक/ विनिर्मित)
6. प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्रक की गतिविधियाँ ______ हैं। (स्वतंत्र/ परस्पर निर्भर)

उत्तर –

1. सेवा क्षेत्रक में रोजगार में उत्पादन के समान अनुपात में वृद्धि नहीं हुई है।
2. तृतीयक क्षेत्रक के श्रमिक वस्तुओं का उत्पादन नहीं करते हैं।
3. संगठित क्षेत्रक के अधिकांश श्रमिकों को रोजगार सुरक्षा प्राप्त होती है।
4. भारत में बड़ी संख्या में श्रमिक असंगठित क्षेत्रक में काम कर रहे हैं।
5. कपास एक प्राकृतिक उत्पाद है और कपड़ा एक विनिर्मित उत्पाद है
6. प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्रक की गतिविधियाँ परस्पर निर्भर हैं।

प्रश्न 2 सही उत्तर का चयन करे-

1. सार्वजनिक और निजी क्षेत्रक आधार पर विभाजित है।
   a) रोजगार की शर्तों।
   b) आर्थिक गतिविधि के स्वभाव।
   c) उद्यमों के स्वामित्व।
   d) उद्यम में नियोजित श्रमिकों की संख्या।

Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

उत्तर – उद्यमों के स्वामित्व।

2. एक वस्तु का अधिकांशत: प्राकृतिक प्रक्रिया से उत्पादन _______ क्षेत्रक की गतिविधि है।

   a) प्राथमिक।

   b) द्वितीयक।

   c) तृतीयक।

   d) सूचना औ

   e) द्योगिकी।

   उत्तर – प्राथमिक।

3. किसी विशेष वर्ष में उत्पादित ______ के मूल्य के कुल योगफल को जीडीपी कहते हैं।

   a) सभी वस्तुओं और सेवाओं।

   b) सभी अंतिम वस्तुओं और सेवाओं।

   c) सभी मध्यवर्ती वस्तुओं और सेवाओं।

   d) सभी मध्यवर्ती ईवं वस्तुओं और सेवाओं।

उत्तर – b) सभी अंतिम वस्तुओं और सेवाओं।

4. जीडीपी के पदों में वर्ष 2003 में तृतीयक क्षेत्र की हिस्सेदारी ______ है।

   a) 20% से 30% के बीच।

   b) 30% से 40% के बीच।

   c) 50% से 60% के बीच।

   d) 70%

उत्तर – a) 50% से 60% के बीच।

प्रश्न (पृष्ठ संख्या 36)

प्रश्न 3 निम्नलिखित का मेल कीजिए-

क्रम.	कृषि क्षेत्रक की समस्याएँ	क्रम.	कुछ संभावित उपाय

Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

1.	असिंचित भूमि	(क)	कृषि आधारित मिलों की स्थापना
2.	फसलों का कम मूल्य	(ख)	सहकारी विपणन समिति
3.	कर्ज भार	(ग)	सरकार द्वारा खाद्यान्नों की वसूली
4.	मंदी काल में रोजगार का अभाव	(घ)	सरकार द्वारा नहरों का निर्माण
5.	कटाई के तुरंत बाद स्थानीय व्यापारियों को अपना अनाज बेचने की विवशता	(ड)	कम ब्याज पर बैंकों द्वारा साख उपलब्ध कराना

उत्तर –

क्रम.	कृषि क्षेत्रक की समस्याएँ	क्रम.	कुछ संभावित उपाय
1.	असिंचित भूमि	(घ)	सरकार द्वारा नहरों का निर्माण
2.	फसलों का कम मूल्य	(ग)	सरकार द्वारा खाद्यान्नों की वसूली
3.	कर्ज भार	(ड)	कम ब्याज पर बैंकों द्वारा साख उपलब्ध कराना
4.	मंदी काल में रोजगार का अभाव	(क)	कृषि आधारित मिलों की स्थापना
5.	कटाई के तुरंत बाद स्थानीय व्यापारियों को अपना अनाज बेचने की विवशता	(ख)	सहकारी विपणन समिति

प्रश्न 4 असंगत की पहचान करें और बताइए क्यों?

1. पर्यटन-निर्देशक, धोबी, दर्जी, कुम्हार
2. शिक्षक, डॉक्टर, सब्जी विक्रेता, वकील
3. डाकिया, मोची, सैनिक, पुलिस कांस्टेबल
4. एम०टी०एन०एल०, भारतीय रेल, एयर इंडिया, सहारा एयरलाइन्स, ऑल इंडिया रेडियो।

Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

उत्तर –

1. पर्यटन-निर्देशक असंगत है, क्योंकि धोबी, दर्जी, कुम्हारे आर्थिक गतिविधियों में लगे हैं जिससे उन्हें धन प्राप्त हो रहा है जबकि पर्यटन-निर्देशक अनार्थिक क्रिया कर रहा है।
2. सब्जी विक्रेता असंगत है, क्योंकि बाकी तीनों तृतीयक क्षेत्रक में लगे हैं, जबकि सब्जी विक्रेता तृतीयक क्षेत्रक में नहीं आता।
3. मोची असंगत हैं, क्योंकि डाकिया, सैनिक, पुलिस कांस्टेबल सार्वजनिक क्षेत्रक में आते हैं जबकि मोची निजी क्षेत्रक में है।
4. सहारा एयरलाइंस प्राइवेट सेक्टर में है जबकि अन्य पब्लिक सेक्टर में

प्रश्न 5 एक शोध छात्र ने सूरत शहर में काम करने वाले लोगों से मिलकर निम्न आँकड़े जुटाए-

कार्य स्थान	**रोजगार की प्रकृति**	**श्रमिकों का प्रतिशत**
सरकार द्वारा पंजीकृत कार्यालयों और कारखानों में	संगठित	15
औपचारिक अधिकार-पत्र सहित बाजारों में अपनी दुकान, कार्यालय और क्लिनिक		15
सड़कों पर काम करते लोग, निर्माण श्रमिक, घरेलू श्रमिक		20
छोटी कार्यशालाएँ, जो प्राय: सरकार द्वारा पंजीकृत नहीं हैं		

तालिका को पूरा कीजिए। इस शहर में असंगठित क्षेत्रक में श्रमिकों की प्रतिशतता क्या है?

उत्तर –

कार्य स्थान	**रोजगार की प्रकृति**	**श्रमिकों का प्रतिशत**
सरकार द्वारा पंजीकृत कार्यालयों और कारखानों में	संगठित	15

Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

औपचारिक अधिकार-पत्र सहित बाजारों में अपनी दुकान, कार्यालय और क्लिनिक	संगठित	15
सड़कों पर काम करते लोग, निर्माण श्रमिक, घरेलू श्रमिक	असंगठित	20
छोटी कार्यशालाएँ, जो प्राय: सरकार द्वारा पंजीकृत नहीं हैं	असंगठित	50

प्रश्न 6 क्या आप मानते हैं कि आर्थिक गतिविधियों का प्राथमिक, द्वितीयक एवं तृतीयक क्षेत्र में विभाजन की उपयोगिता है? व्याख्या कीजिए कि कैसे?

उत्तर – समाज में लोग अपनी आजीविका कमाने के लिए विभिन्न प्रकार की आर्थिक गतिविधियों में लगे रहते हैं। कोई वस्तुओं का उत्पादन करता है, कोई वस्तुओं को बेचता है या फिर अन्य काम में लगे रहते हैं। इन सब आर्थिक क्रियाओं को तभी समझा जा सकता है जब उन्हें विभिन्न वर्गों में विभाजित किया जाए। इसलिए विभिन्न आर्थिक क्रियाओं को प्राथमिक, द्वितीयक तथा तृतीयक क्षेत्र में बाँट कर उन्हें समझने का प्रयास किया गया है। प्राथमिक क्षेत्र में केवल वे क्रियाएँ शामिल की गई हैं जो प्राकृतिक संसाधनों का प्रयोग करके ही की जा सकती हैं, जैसे-कृषि कार्य, पशुपालन आदि। द्वितीयक क्षेत्र में वे क्रियाएँ शामिल हैं जो प्राथमिक क्षेत्र के संसाधनों का प्रयोग करके विभिन्न वस्तुओं का निर्माण करती हैं, जैसे-गन्ने से चीनी बनाना तथा कपास से कपड़ा तैयार करना। तृतीयक क्षेत्र में किसी वस्तु का निर्माण न करके केवल सेवाएँ प्रदान की जाती हैं, जैसे-बैंकिंग, परिवहन तथा संचार सेवाएँ आदि। ये महत्वपूर्ण क्रियाएँ हैं क्योंकि अन्य दोनों प्रकार की क्रियाओं का विकास इन्हीं पर निर्भर करता है।

प्रश्न 7 इस अध्याय में आए प्रत्येक क्षेत्रकों को रोजगार और सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) पर ही क्यों केंद्रित करना चाहिए? चर्चा करें।

उत्तर – जीडीपी से अर्थव्यवस्था की पूरी तस्वीर मिलती है और विभिन्न क्षेत्रकों का योगदान समझ में आता है। नीति निर्धारकों के लिए जीडीपी एक तुरंत समझ में आने वाला रेफरेंस प्रदान करता

Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

है। इसलिए जीडीपी का अपना महत्व है। रोजगार के अवसरों से किसी भी अर्थव्यवस्था की सही सेहत का पता चलता है। इसलिए रोजगार की आँकड़े भी महत्वपूर्ण होते हैं।

प्रश्न 8 जीविका के लिए काम करनेवाले अपने आसपास के वयस्कों के सभी कार्यों की लंबी सूची बनाइए। उन्हें आप किस तरीके से वर्गीकृत कर सकते हैं? अपने उत्तर की व्याख्या कीजिए।

उत्तर – जीविका के लिए काम करने वाले आस-पास के वयस्कों को हम निम्नलिखित आधार पर वर्गीकृत कर सकते हैं-

कार्य की प्रकृति के आधार पर वर्गीकरण-

1. प्राथमिक क्षेत्र-वे सभी आर्थिक क्रियाएँ जो प्राकृतिक संसाधनों के प्रयोग द्वारा की जाती हैं उन्हें प्राथमिक क्षेत्र में रखा जाता है, जैसे-कृषि कार्य, खनन कार्य, मत्स्य पालन आदि।
2. द्वितीयक क्षेत्र-इस क्षेत्र में प्राथमिक क्षेत्र से प्राप्त विभिन्न उत्पादों का प्रयोग करके विभिन्न उपयोगी वस्तुओं का निर्माण किया जाता है, जैसे-कपास से कपड़ा बनाना, गन्ने से चीनी बनाना आदि।
3. तृतीयक क्षेत्र-इस क्षेत्र में किसी वस्तु का निर्माण नहीं किया जाता बल्कि सेवाएँ प्रदान की जाती हैं। ये सेवाएँ प्राथमिक तथा द्वितीयक क्षेत्र के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इसके अंतर्गत बैंकिंग, बीमा, रेलवे संचार एवं परिवहन आदि को शामिल किया जाता है।

रोजगार की दशाओं के आधार पर वर्गीकरण-

रोजगार की दशाएँ किस प्रकार की हैं इस आधार पर हम इसे दो भागों में बाँट सकते हैं।

1. **संगठित क्षेत्र-** संगठित क्षेत्र-इसमें वे गतिविधियाँ आती हैं जिनमें रोजगार की अवधि नियमित होती है तथा इन्हें सरकारी नियमों को मानना पड़ता है।
2. **असंगठित क्षेत्र-** असंगठित क्षेत्र-ये क्षेत्र सरकारी नियंत्रण से बाहर होता है। इसमें रोजगार की अवधि तथा नियम, उपनिय आदि निश्चित नहीं होते।

प्रश्न 9 तृतीयक क्षेत्रक अन्य क्षेत्रकों से भिन्न कैसे है? सोदाहरण व्याख्या कीजिए।

उत्तर –

Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

तृतीयक सेक्टर	अन्य सेक्टर
किसी भी भौतिक वस्तु का निर्माण नहीं होता है।	भौतिक वस्तु का निर्माण होता है।
मशीन की जरूरत नहीं पड़ती है।	मशीन की जरूरत पड़ती है।
इस सेक्टर में श्रमिकों के मानसिक क्षमता की अधिक जरूरत पड़ती है।	इस क्षेत्र में श्रमिकों के शारीरिक परिश्रम की अधिक जरूरत पड़ती है।
उदाहरण- डिजाइनर, शेफ, शिक्षक, वकील, आदि।	**उदाहरण-** मिस्त्री, बढ़ई, राजमिस्त्री, आदि।

प्रश्न 10 प्रच्छन्न बेरोजगारी से आप क्या समझते हैं? शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों से उदाहरण देकर व्याख्या कीजिए।

उत्तर – प्रच्छन्न बेरोजगारी अर्थात छुपी हुई बेरोजगारी, यह वह स्थिति है, जब एक श्रमिक काम तो कर रहा होता है लेकिन उसकी क्षमता का पूरा उपयोग नहीं हो पाता है। ऐसी स्थिति में एक श्रमिक किसी खास काम में इसलिये लगा रहता है क्योंकि उसके पास उससे बेहतर करने को कुछ भी नहीं होता। इस स्थिति में श्रमिक के पास कोई विकल्प नहीं होता बल्कि किसी खास काम को करने की मजबूरी होती है।

उदाहरण-

1. ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि क्षेत्र में अक्सर देखने को मिलता है कि जिस खेत पर काम करने के लिए एक दो लोग काफी होते हैं उसी खेत पर कई लोग काम करते रहते हैं। इसलिए, यहां तक कि अगर हम कुछ लोगों को (कृषि व्यवसाय से) बाहर ले जाते हैं, तो उत्पादन प्रभावित नहीं होगा।
2. शहरी क्षेत्रों में सेवा क्षेत्र में हजारों अनियत कर्मचारी हैं जहां वे पूरे दिन काम करते हैं परन्तु बहुत कम कमा पाते हैं, एक ही दुकान पर आपको कई भाई काम करते मिल जाएँगे। उनको अलग अलग दुकान चलाना चाहिए लेकिन सही अवसर के अभाव में उन्हें एक ही दुकान पर काम करने को बाध्य होना पड़ता है।

प्रश्न 11 खुली बेरोजगारी एवं प्रच्छन्न बेरोजगारी के बीच विभेद कीजिए।

Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

उत्तर –

- **खुली बेरोजगारी-** वह परिस्थिति जिसमें किसी देश में श्रम शक्ति तो अधिक होती है किंतु औद्योगिक ढाँचा छोटा होता है, वह सारी श्रम शक्ति को नहीं खपा पाता अर्थात् श्रमिक काम करना चाहता है किंतु उसे काम नहीं मिलता। यह बेरोजगारी भारत के अधिकतर औद्योगिक क्षेत्र में पाई जाती है।
- **प्रच्छन्न या गुप्त बेरोजगारी-** वह परिस्थिति जिसमें व्यक्ति काम में लगे हुए दिखाई देते हैं किंतु वास्तव में वे बेरोजगार होते हैं। जैसे-भूमि के टुकड़े पर आठ लोग काम कर रहे हैं किंतु उत्पादन उतना ही हो रहा है जितना पाँच लोगों के काम करने से होता है। ऐसे में तीन अतिरिक्त व्यक्ति जो काम में लगे हैं वह छुपे हुए बेरोजगार हैं क्योंकि उनके काम से उत्पादन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

प्रश्न (पृष्ठ संख्या 37)

प्रश्न 12 भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास में तृतीयक क्षेत्रक कोई महत्त्वपूर्ण भूमिका नहीं निभा रहा है क्या आप इससे सहमत हैं अपने उत्तर के समर्थन में कारण दीजिए?

उत्तर – इसका कारण यह है कि द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्रक में रोजगार के पर्याप्त अवसरों का सृजन नहीं हुआ। यद्यपि इस आलेख 2 भारतीय अर्थव्यवस्था के क्षेत्रक Page 9 अवधि में वस्तुओं के औद्योगिक उत्पादन में 3 गुना से ज्यादा वृद्धि हुई परन्तु औद्योगिक रोजगार में लगभग 3 गुना ही वृद्धि हुई ।

प्रश्न 13 “भारत में सेवा क्षेत्रक दो विभिन्न प्रकार के लोग नियोजित करते हैं।“ ये लोग कौन हैं?

उत्तर – सर्विस सेक्टर में नियमित और अनियमित श्रमिक काम करते हैं। जो श्रमिक अपने हुनर और मानसिक क्षमताओं का प्रयोग करता है और सामान्यत: सीधे रूप से नियोजित होता है उसे नियमित श्रमिक कहते हैं। जो श्रमिक ऐसी सेवा प्रदान करता है जिसमें मानसिक क्षमताओं की खास भूमिका न हो उसे अनियमित या अनौपचारिक श्रमिक कहते हैं। अंशकालीन रूप से नियोजित श्रमिकों को भी अनियमित श्रमिक की श्रेणी में रखा जाता है। उदाहरण: एक ठेले का मालिक जो किसी प्रकाशक के यहाँ कागज पहुँचाता है एक अनियमित श्रमिक होता है।

Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

प्रश्न 14 "असंगठित क्षेत्रक में श्रमिकों का शोषण किया जाता है।" क्या आप इस विचार से सहमत हैं? अपने उत्तर के समर्थन में कारण दीजिए।

उत्तर – यह सही है कि असंगठित क्षेत्रक में श्रमिकों का शोषण किया जाता है। असंगठत क्षेत्रक में काम करने वालों को कम मेहनताना मिलता है और उन्हें लंबे समय के लिये काम करना पड़ता है। उन्हें छुट्टियाँ शायद ही मिलती हैं। उन्हें सामाजिक सुरक्षा भी नहीं मिलती है।

प्रश्न 15 आर्थिक गतिविधियाँ रोजगार की परिस्थितियों के आधार पर कैसे वर्गीकृत की जाती हैं?

उत्तर – अर्थव्यवस्था में गतिविधियाँ रोजगार की परिस्थितियों के आधार पर अनेक मानदंडों के आधार पर वर्गीकृत की जाती हैं। मुख्यतः आर्थिक गतिविधियों को तीन प्रकार के क्षेत्रक वर्गीकरण में रखा जाता है

1. प्राथमिक, द्वितीयक, तृतीयक-

- प्राथमिक क्षेत्र वह क्षेत्र है जिसमें प्राकृतिक साधनों का प्रयोग करके वस्तुओं का उत्पादन किया जाता जैसे वानिकी, मत्सन।
- द्वितीयक क्षेत्र वह क्षेत्र है जिसमें उद्यम एक प्रकार के वस्तु को दूसरी प्रकार की वस्तु में परिवर्तित करता है, जैसे कपास द्वारा कपड़े का उत्पादन।
- तृतीयक क्षेत्र वह क्षेत्र है जिसमें सेवाओं का उत्पादन किया जाता है। जैसे बीमा, बैंकिंग, संचार आदि।

2. संगठित-असंगठित-

- संगठित क्षेत्र में वे उद्यम आते हैं जहां रोजगार की अवधि नियमित होती है।
- असंगठित क्षेत्र छोटी-छोटी और बिखरी इकाइयों जो अधिकांशतः सरकारी नियंत्रण से बाहर होती हैं, से निर्मित होती है।

3. सार्वजनिक तथा निजी-

- सार्वजनिक क्षेत्र वह क्षेत्र होता है जिसमें उत्पादन के साधनों पर सरकार का स्वामित्व होता है। जैसे रेलवे, डाकघर आदि।
- निजी क्षेत्र वह क्षेत्र है जिसमें उत्पादन के साधनों पर निजी व्यक्ति या संस्थाओं का स्वामित्व होता है, जैसे- टाटा कंपनी, रिलायंस कंपनी आदि।

Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

- इन क्षेत्रकों में हम आर्थिक गतिविधियों को रोज़गार की परिस्थितियों के आधार पर वर्गीकृत कर सकते हैं। क्योंकि कुछ गतिविधियां वस्तुओं का उत्पादन करते हैं और कुछ सेवाओं का सृजन करती हैं।

प्रश्न 16 संगठित और असंगठित क्षेत्रकों की रोजगार परिस्थितियों की तुलना करें।

उत्तर –

संगठित क्षेत्रक	असंगठित क्षेत्रक
इस सेक्टर में काम एक सिस्टम से होता है और नियमों की सीमा रेखा के अंदर होता है।	इस सेक्टर में कोई सिस्टम नहीं होता और ज्यादातर नियमों का उल्लंघन होता है।
इस सेक्टर में दिया जाने वाला पारिश्रमिक सरकार के नियमों के अनुसार होता है।	इस सेक्टर में दिया जाने वाला पारिश्रमिक सरकार द्वारा तय पारिश्रमिक से कम होता है।
श्रमिकों को नियम के हिसाब से सामाजिक सुरक्षा मिलती है।	सामाजिक सुरक्षा का अभाव होता है।
नौकरी सामान्यत: सुरक्षित होती है।	नौकरी की कोई सुरक्षा नहीं होती है।

प्रश्न 17 मनरेगा 2005 के उद्देश्यों की व्याख्या कीजिए।

Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

उत्तर – 'काम के अधिकार' के लक्ष्यों को पूरा करने के उद्देश्य से नरेगा 2005 को लागू किया गया था। इस प्रोग्राम के तहत ग्रामीण क्षेत्र के हर परिवार के एक व्यक्ति को साल में 100 दिन के रोजगार की गारंटी दी जाती है। यह कार्यक्रम ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी उन्मूलन के लिये प्रतिबद्ध है। इस कार्यक्रम का एक और उद्देश्य है गाँवों से महानगरों की ओर होने वाले भारी पलायन को रोकना।

प्रश्न 18 अपने क्षेत्र से उदाहरण लेकर सार्वजनिक और निजी क्षेत्रक की गतिविधियों एवं कार्यों की तुलना कीजिए।

उत्तर – **सार्वजनिक क्षेत्रक-** वे उद्योग जो सरकारी तंत्र के अधीन होते हैं सार्वजनिक उद्योग कहलाते हैं, जैसे-भारतीय रेल, लोहा-इस्पात उद्योग, जहाज निर्माण आदि। सार्वजनिक क्षेत्र में ऐसी वस्तुओं या सेवाओं का निर्माण होता है जो लोगों के लिए कल्याणकारी है। इनका उद्देश्य निजी हित या लाभ कमाना नहीं होता बल्कि सार्वजनिक लाभ इनका उद्देश्य होता है। इस क्षेत्र में वस्तुओं एवं सेवाओं की कीमत का निर्धारण सरकार द्वारा किया जाता है। निजी क्षेत्रक-वे उद्योग जो निजी व्यक्तियों के स्वामित्व में होते हैं

निजी क्षेत्रक कहलाते हैं। इसमें वे उद्योग आते हैं जो आम जनता की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं जैसे-टेलीविजन, एयर कंडीशनर, फ्रिज आदि बनाने वाले उद्योग। ये गतिविधियाँ निजी लाभ कमाने के उद्देश्य से की जाती हैं। निजी क्षेत्र कल्याणकारी कार्य करने के लिए बाध्य नहीं है। यदि वह ऐसा कोई काम करता भी है तो उसकी अधिक कीमत लेता है जैसे-निजी विद्यालय सरकारी विद्यालयों से अधिक फीस वसूलते हैं। निजी क्षेत्र के उद्योगों में वस्तुओं की कीमतों का निर्धारण बाजारी शक्तियों द्वारा होता है।

Fukey Education

प्रश्न 19 अपने क्षेत्र से एक एक उदाहरण देकर निम्न तालिका को पूरा कीजिए और चर्चा कीजिए-

	सुव्यवस्थित प्रबंध वाले संगठन	**अव्यवस्थित प्रबंध वाले संगठन**
सार्वजनिक क्षेत्रक		
निजी क्षेत्रक		

उत्तर –

	सुव्यवस्थित प्रबंध वाले संगठन	**अव्यवस्थित प्रबंध वाले संगठन**

सार्वजनिक क्षेत्रक	एन.टी.पी.सी.	बी.एस.एन.एल.
निजी क्षेत्रक	टाटा पावर	स्वादिष्ट ब्रेड कम्पनी

प्रश्न 20 सार्वजनिक क्षेत्रक की गतिविधियों के कुछ उदाहरण दीजिए और व्याख्या कीजिए कि सरकार द्वारा इन गतिविधियों का कार्यांवयन क्यों किया जाता है?

उत्तर – सार्वजनिक क्षेत्रक की गतिविधियों के कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं-

- डाकघर
- भारतीय रेलवे
- भारतीय संचार निगम लिमिटेड
- परिवहन निगम
- विद्युत बोर्ड
- भारतीय जीवन बीमा निगम

सरकार द्वारा इन गतिविधियों का कार्यान्वयन स्वयं किया जाता है क्योंकि इन पर बहुत अधिक धन व्यय करना पड़ता है। इन गतिविधियों का इस्तेमाल करने वाले हजारों लोगों से मुद्रा एकत्र करना भी आसान नहीं है। फिर यदि वे इन गतिविधियों को निजी क्षेत्र के उपलब्ध करवाते हैं तो इसकी ऊंची कीमत लेते हैं। इसलिए सरकार इनमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

प्रश्न 21 व्याख्या कीजिए कि किसी देश के आर्थिक विकास में सार्वजनिक क्षेत्रक कैसे योगदान करता है?

उत्तर – किसी भी देश के आर्थिक विकास में पब्लिक सेक्टर का अहम योगदान होता है। जब भारत एक गरीब देश हुआ करता था तो यहाँ की अर्थव्यवस्था को शुरुआती गति प्रदान करने में पब्लिक सेक्टर ने अहम भूमिका निभाई थी। पब्लिक सेक्टर ने आधारभूत उद्योग और आधारभूत संरचना तैयार की जिसके कारण प्राइवेट सेक्ट फल फूल सका। इस तरह से भारत के आर्थिक विकास में पब्लिक सेक्टर ने एक उत्प्रेरक का काम किया।

Fukey Education

प्रश्न 22 असंगठित क्षेत्रक के श्रमिकों को निम्नलिखित मुद्दों पर संरक्षण की आवश्यकता है-मजदूरी, सुरक्षा और स्वास्थ्य। उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए।

उत्तर – असंगठित क्षेत्र के मजदूरों को मजदूरी, सुरक्षा और स्वास्थ्य जैसे मुद्दों पर संरक्षण की आवश्यकता है। इसे निम्न प्रकार से स्पष्ट किया जा सकता है-

1. मजदूरी-असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों को काम करने का समय निश्चित नहीं है उन्हें 10 से 12 घंटे तक बिना ओवरटाइम के कार्य करना पड़ता है। इन श्रमिकों में प्राय: रोजगार सुरक्षा का अभाव पाया जाता है। गरीबी के कारण ये प्रायः कम मजदूरी दरों पर काम करने को तैयार हो जाते हैं। इसलिए इन्हें इस संदर्भ में सुरक्षा दी जानी चाहिए। इनके भी काम करने के घंटे तथा मजदूरी निश्चित होनी चाहिए।
2. सुरक्षा-इस क्षेत्र के श्रमिक प्राय: जोखिम वाले कार्यों में संलग्न रहते हैं जैसे-ईंट उद्योग, कोयले की खानों आदि में कार्य करते हैं। अत: इनकी सुरक्षा की गारंटी मिलनी चाहिए।
3. स्वास्थ्य-ये श्रमिक गरीब होते हैं। इनको पौष्टिक आहार नहीं मिल पाता। ये स्वास्थ्य के विपरीत परिस्थितियों में काम करते हैं। इन कारणों से इनकी स्थिति अच्छी नहीं होती। इनके स्वास्थ्य के संदर्भ में भी महत्वपूर्ण कदम उठाए जाने चाहिए।

प्रश्न 23 अहमदाबाद में किए गए एक अध्ययन पत्र में पाया गया कि नगर के 15,00,000 श्रमिकों में से 11,00,000 श्रमिक असंगठित क्षेत्रक में काम करते थे। वर्ष 1997-98 में नगर की कुल आय 600 करोड़ रुपये थी इसमें से 320 करोड़ रुपये संगठित क्षेत्रक से प्राप्त होते थे।

Fukey Education

उत्तर –

	संगठित क्षेत्रक	असंगठित क्षेत्रक	कुल योग
श्रमिकों की संख्या	400,000	1,100,000	1,500,000
कुल आय (करोड़ रुपये)	320	280	600

इस सारणी से यह स्पष्ट है कि असंगठित क्षेत्रक में काम करने वाले श्रमिकों की संख्या अधिक है। लेकिन संगठित क्षेत्र में प्रति व्यक्ति आय अधिक है। सरकार को चाहिए कि असंगठित क्षेत्रक के

Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

मालिकों को इस बात के लिये प्रोत्साहित करे कि वे संगठित क्षेत्रक में आ जाएँ। सरकार को इसके लिये कुछ प्रलोभन देना चाहिए जैसे कि टैक्स ब्रेक।

प्रश्न 24 निम्नलिखित तालिका में तीनों क्षेत्रकों का सकल घरेलू उत्पाद रुपये (करोड़) में दिया गया है-

वर्ष	**प्राथमिक**	**द्वितीयक**	**तृतीयक**
2000	52,000	48,500	1,33,500
2013	8,00,500	10,74,000	38,68,000

- वर्ष 1950 एवं 2000 के लिए जी०डी०पी० में तीनों क्षेत्रकों की हिस्सेदारी की गणना कीजिए।
- अध्याय में दिए आरेख-2 के समान इसे दंड-आरेख के रूप में प्रदर्शित कीजिए।
- दंड-आरेख से हम क्या निष्कर्ष प्राप्त करते हैं?

उत्तर –

1. वर्ष 2000 एवं 2013 के लिए जीडीपी में तीनों क्षेत्रकों की हिस्सेदारी की गणना-
2. वर्ष 2000 में कुल जीडीपी $= 52,000 + 48,500 + 1,33,500 = 2,34,000$
3. वर्ष 2000 में प्राथमिक सेक्टर की हिस्सेदारी $= \left(\frac{52{,}000}{234{,}000}\right) \times 100 = 22.22$
4. वर्ष 2000 में द्वितीयक सेक्टर की हिस्सेदारी $= \left(\frac{48{,}500}{234{,}000}\right) \times 100 = 20.72$
5. वर्ष 2000 में तृतीयक सेक्टर की हिस्सेदारी $= \left(\frac{133{,}500}{234{,}000}\right) \times 100 = 57.05$
6. वर्ष 2013 में कुल जीडीपी $= 8,00,500 + 10,74,000 + 38,68,000 = 57,42,500$

Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

7. वर्ष 2013में प्राथमिक सेक्टर की हिस्सेदारी $= \left(\frac{8,00,500}{57,42,500}\right) \times 100 = 13.93$

8. वर्ष 2013 में द्वितीयक सेक्टर की हिस्सेदारी $= \left(\frac{10,74,000}{57,42,500}\right) \times 100 = 18.70$

9. वर्ष 2013 में तृतीयक सेक्टर की हिस्सेदारी $= \left(\frac{38,68,000}{57,42,500}\right) \times 100 = 67.35$

दंड-आरेख-

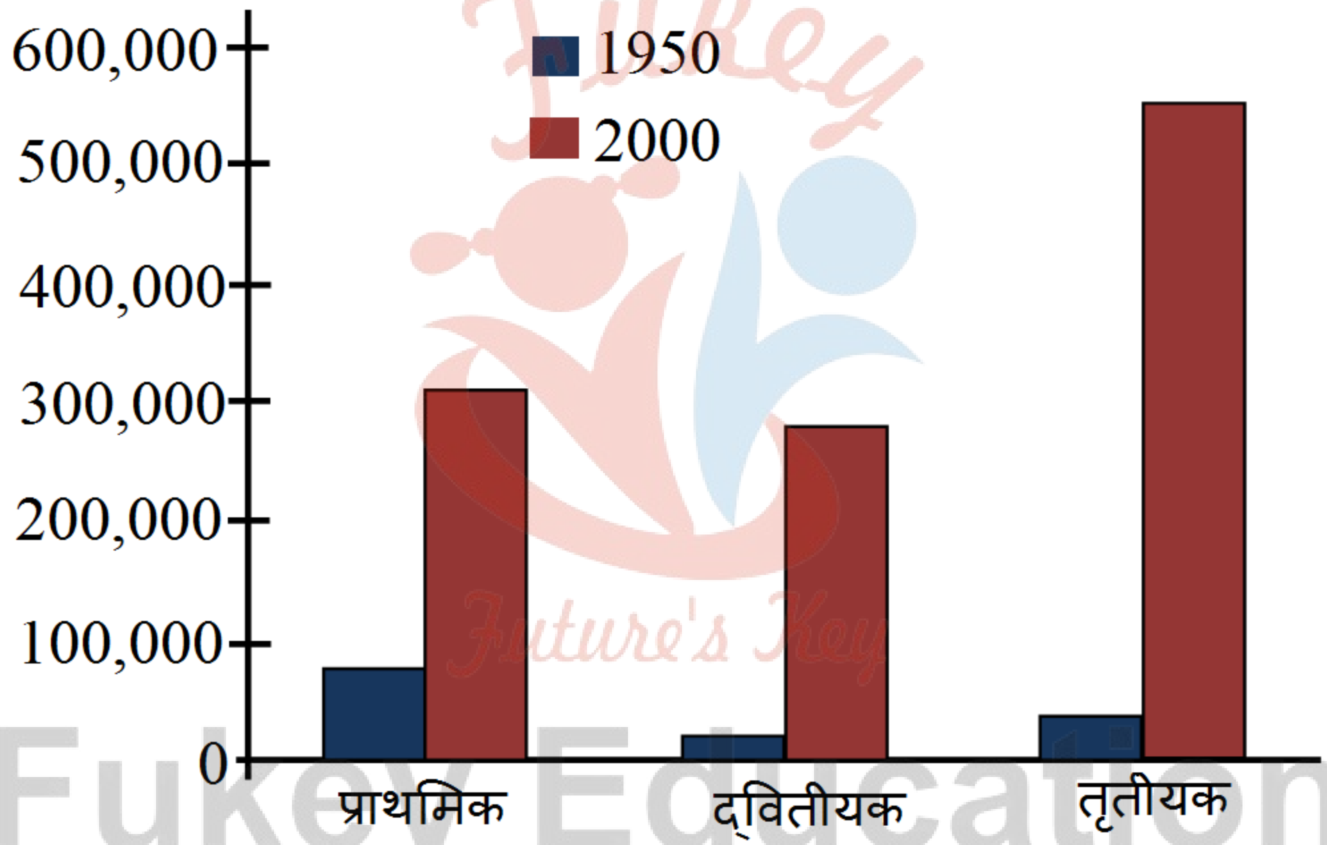

दंड-आरेख का निष्कर्ष-

इस दण्ड आरेख से सिद्ध होता है कि सकल घरेलू उत्पाद में जहाँ प्राथमिक क्षेत्र का योगदान 22% से 13% तथा द्वितीयक क्षेत्र का योगदान 20.72% से 18.70% (कम) हो गया है, वहीं तृतीयक क्षेत्रकों में वृद्धि हुई है हो गया तथा तृतीयक क्षेत्र का हिस्सा 57.05 %से 67.35%हो गया।

Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com